ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-१०३
दिनांक-मंगलवार,३१ दिसम्बर,२०१९

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः १४.५ एवं ६.० डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९४ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ६९ प्रतिशत, हवा की औसत गति ४.८ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण १.३ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन १.९ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १०.६ एवं दोपहर में १६.७ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा तथा सुबह में कुहासा देखा गया।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(१-५ जनवरी,२०२०)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १-५ जनवरी,२०२० तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के तराई एवं मैदानी जिलों में आसमान में गरज वाले हल्के से मध्यम बादल बन सकते है। पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से अगले २-३ जनवरी को हल्की वर्षा या बूंदाबूंदी की संभावना है। उत्तर-पश्चिम बिहार के एक-दो स्थानों पर ओला पड़ सकते हैं।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान १४ से १६ डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान ५ से ७ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। १ जनवरी को भी कोल्ड-डे की स्थिति बनी रह सकती है एवं रात्री एवं सुबह में मध्यम से घने कुहासे छा सकते है।
- इस दौरान औसतन ८ से १२ कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पुरवा हवा चलने का अनुमान है। हलाँकि ५ जनवरी में पछिया हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ९० से ९५ प्रतिशत तथा दोपहर में ७० से ७५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पूर्वानुमान की अवधि में हल्की वर्षा की संभावना को देखते हुए कृषि कार्य जैसे कीटनाशक दवाओं के छिड़काव आदि में सर्तकता बरतने की आवश्यकता है। किसान भाई खड़ी फसलों में सिंचाई फिलहाल स्थगित रखें।
- वर्त्तमान मौसम में आलू, गाजर, मटर, टमाटर, धनियाँ, लहसून एवं अन्य रबी फसलो में कृषक भाई झुलसा रोग की निगरानी करें। बदलीनुमा मौसम तथा वतावरण में नमी होने पर यह बीमारी फसलों में काफी तेजी से फैलती है। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व सिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पूरा पौधा झुलस जाता है। इस रोग के लक्षण दिखने पर २.५ ग्राम डाई-इथेन एम० ४५ फफूँदनाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर समान रुप से फसल पर २-३ छिड़काव १० दिनों के अन्तराल पर आसमान साफ रहने पर करें।
- सब्जियों में निकाई-गुड़ाई करें। बैगन की फसल को तना एवं फल छेदक कीट की निगरानी करें। फसल में कीट का प्रकोप दिखने पर रोकथाम हेतु सर्वप्रथम ग्रसित तना एवं फलो को इकठा कर नष्ट कर दें तथा फसल में स्पिनोसेड ४८ ई०सी०@ १.० मि०ली० प्रति ४ ली० पानी की दर से छिड़काव करे। कीटनाशक दवा के तैयार घोल में गोंद १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से अवश्य मिलावें।
- रबी प्याज की रोपाई प्राथमिकता से करें। पाँक्ति से पाँक्ति की दुरी १५ से०मी० तथा पौध से पौध की दुरी १० से०मी० पर करे। पौध की रोपाई अधिक गहराई में नहीं करें। अगात रोपी गई प्याज में निकौनी करे। लहसुन की फसल में निकौनी एवं कीट-व्याधि की निगरानी करें।
- गेहूँ की ३० से ३५ दिनों (पहली सिंचाई के बाद) की अवस्था जिसमें कई प्रकार के खर-पतवार गेंहूँ में उग आते है। इन खरपतवारों का विकास काफी तेजी से होता है और ये गेहूँ की बढ़वार को अत्यधिक प्रभावित करती है। जिससे उपज में कमी आती है। इन सभी प्रकार के खरपतवारों के रोकथाम हेतु सल्फोसल्फयुरॉन ३३ ग्राम प्रति हेक्टर एवं मेटसल्फयुरॉन २० ग्राम प्रति हेक्टर दवा ५०० लीटर पानी में मिलाकर खड़ी फसल में छिड़काव करें। बिलम्ब से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो २१ से २५ दिनों की हों गयी हो ३० किलो नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें।
- नवम्बर माह के शुरु में बोयी गई रबी मक्का की फसल जो ५० से ६० दिनों की अवस्था में है। इन फसलों में ५० किलोग्राम नेत्रजन उर्वरक का व्यवहार कर मिट्टी चढ़ावें। मक्का की फसल में तना बेधक कीट की निगरानी करें। इसकी सूंडिया कोमल पत्तियों को खाती है तथा मध्य कलिका की पत्तियों के बीच घुसकर तने में पहुँच जाती है। तने के गुद्दे को खाती हुई जड़ की तरफ बढ़ती हुई सुरंग बनाती है। जिससे मध्य कलिका मुरझायी नजर आती है जो बाद में सुख जाती है। एक ही पौधे में कई सूंडिया मिलकर पौधें को खाती है। इस प्रकार फसल को यह काफी नुकसान पहुचाती है। उपचार हेतु फसल में फोरेट १० जी० या कार्बोफ्यूरान ३ जी० का ७-८ दाना प्रति गाभा प्रति पौधा दें। फसल में अधिक नुकसान होने पर डेल्टामिथ्रिन २५०-३०० मि०ली० प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- पिछात मटर में निकाई-गुराई करें। फसल में फली छेदक कीट की निगराणी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेश कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियॉ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाश फंदा का उपयोग करें। १५-२० टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास २५ ई० सी० या नोवाल्युरॉन १० ई० सी० का १ मि० ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- तापमान में लगातार गिरावट के कारण दुधारु पशुओं के दुध उत्पादन में आयी कमी को दूर करनें के लिए हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से ५० ग्राम नमक, ५० से १०० ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें। बिछावन के लिए सुखी घास या राख का उपयोग करें।

आज का अधिकतम तापमानः १४.६ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ८.२ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः ४.२ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ४.३ डिग्री कम

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकार